

प्रयागराज नगर के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का नगर विकास में भूमिका

डॉ. शिल्पा देवी (प्रवक्ता, भूगोल)¹, डॉ० सर्वेप कृष्ण²

¹ श्री राम प्रताप इंटर कॉलेज, सिरसा-प्रयागराज

² वरिष्ठ सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, दी०द०उ०गो०वि०, गोरखपुर, यू०पी०

सारांश :- गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों का संगम अध्ययन क्षेत्र प्रयागराज का एक अद्वितीय भौगोलिक संयोग है। वेद, पुराण, संस्कृत और कवियों से लेकर लोक साहित्य तक, इस पवित्र संगम का गौरव जारी रहा है। भौतिकी के क्षेत्र में हिमालय पर्वत भारतीय भूगोल की सीमा को दर्शाता है, ठीक उसी तरह प्रयाग का संगम हमारी प्राचीन धार्मिक परंपरा का सर्वोत्तम प्रतीक है।

अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर किसी समाज की परंपराओं, लोककला, रीति-रिवाजों, धार्मिक आस्थाओं, उत्सवों, मौखिक परंपराओं तथा पारंपरिक ज्ञान का समग्र रूप है। प्रयागराज भारत के प्राचीनतम सांस्कृतिक नगरों में से एक है, जहाँ कुंभ मेला, माघ मेला, लोक परंपराएँ, धार्मिक अनुष्ठान तथा सांस्कृतिक गतिविधियाँ नगर की विशिष्ट पहचान निर्मित करती हैं। यह अध्ययन प्रयागराज की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर और नगर विकास के मध्य संबंध का विश्लेषण करता है।

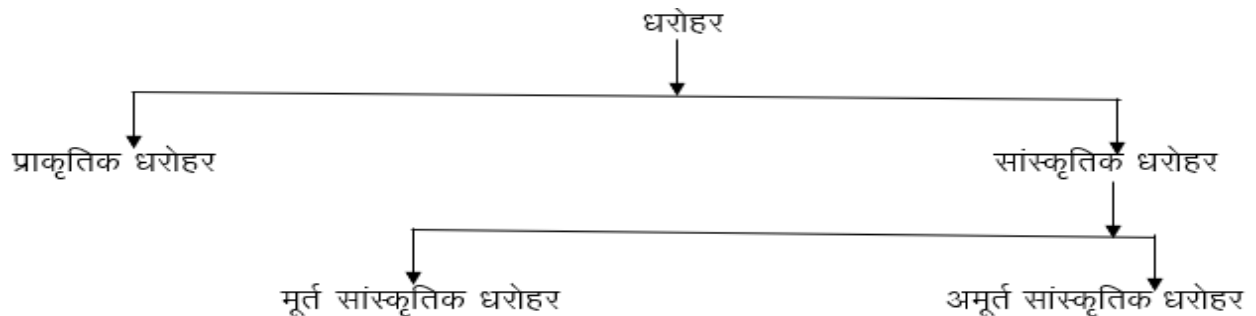
शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर पर्यटन, स्थानीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक एकता, सांस्कृतिक पहचान तथा सतत शहरी विकास को प्रोत्साहित करती है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि नगर नियोजन एवं विकास नीतियों में सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण

को सम्मिलित करने से प्रयागराज के समग्र एवं सतत विकास को नई दिशा मिल सकती है।

मुख्य शब्द :- अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर, नगर विकास, कुंभ मेला, सांस्कृतिक पर्यटन, सतत विकास।

I. प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक विविधता उसकी सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है। सांस्कृतिक धरोहर को सामान्यतः मूर्त एवं अमूर्त दो भागों में विभाजित किया जाता है। अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में वे परंपराएँ, अभिव्यक्तियाँ, ज्ञान, कौशल, लोककला, उत्सव तथा सामाजिक प्रथाएँ सम्मिलित होती हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं। यह धरोहर किसी समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।



प्रयागराज, जिसे प्राचीन काल में प्रयाग के नाम से जाना जाता था, धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण नगर है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्थित यह नगर कुंभ मेला और माघ मेला जैसे विश्वविख्यात आयोजनों के लिए प्रसिद्ध है। इन आयोजनों में निहित धार्मिक अनुष्ठान, लोक परंपराएँ, सांस्कृतिक प्रदर्शन और सामाजिक सहभागिता अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

वर्तमान समय में नगर विकास केवल भौतिक अवसंरचना तक सीमित नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन को भी विकास का आवश्यक अंग माना जाता है। प्रयागराज की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर पर्यटन को बढ़ावा देने, रोजगार सृजन, स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने तथा नगर की विशिष्ट पहचान को बनाए रखने में

महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस संदर्भ में अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर और नगर विकास के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है। ऐसी कोई वस्तु या सम्पत्ति जो प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक महत्व के हैं, जिसे आने वाली भावी पीढ़ियों के लिए संजोकर रखा जाता है उसे 'धरोहर' की संज्ञा प्रदान की जाती है (कुमार और सिंह, 2019)। 'धरोहर' का सम्बन्ध उसी प्रकार है जैसे किसी बच्चे का अपनी माँ से सम्बन्ध होता है (दृष्टि)। हमारे धरोहर हमारे गौरव के प्रतीक होते हैं जो हमारी संस्कृति और धर्म को प्रकट करते हैं हमारी कला और संस्कृति हमारे धरोहर स्थल ही हैं।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य प्रयागराज की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के विभिन्न स्वरूपों की पहचान करना तथा नगर विकास में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना है। साथ ही, यह अध्ययन सांस्कृतिक संरक्षण और

सतत शहरी विकास के मध्य संतुलन स्थापित करने के उपायों पर भी प्रकाश डालता है।

II. अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रयागराज नगर के प्रमुख अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की पहचान करना।
2. नगर विकास में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना।
3. सांस्कृतिक पर्यटन एवं आर्थिक विकास पर उनके प्रभाव का अध्ययन करना।
4. अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर :-

अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर से तात्पर्य ऐसे सांस्कृतिक प्रथाओं, अभिव्यक्ति, ज्ञान, कौशल, और परम्पराओं से है जो लोगों में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में आती हैं। सांस्कृतिक धरोहर के तत्व भौतिक वस्तु या वस्तुशील नहीं हैं, बल्कि ये सांस्कृतिक भिन्नता और पहचान के महत्वपूर्ण अमूर्त पहलु हैं। यूनेस्को के अनुसार "अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर उन जीवित सांस्कृतिक परंपराओं, ज्ञान, कौशलों, अनुष्ठानों और अभिव्यक्तियों का समुच्चय है जिन्हें समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान का अंग मानते हैं तथा जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं।"

सांस्कृतिक पर्यटन देश या क्षेत्र की संस्कृति के साथ यात्री के सम्बन्धों से सम्बन्धित पर्यटन का समुच्चय होता है, विशेष रूप से उन भौगोलिक

क्षेत्रों में लोगों की जीवन-शैली, उन लोगों का इतिहास, उनकी कला, वास्तुकला, धर्म और अन्य तत्व जो उनके जीवन के तरीके को आकार देने में मदद करता है। सांस्कृतिक पर्यटन किसी सांस्कृतिक धरोहर स्थलों (जैसे- तीर्थस्थल, ऐतिहासिक स्थल, मेला, पर्व, मंदिर, इमारत आदि) से सम्बन्धित होता है।

यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन) द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर को मान्यता दी जाती है और इसके संरक्षण को वैश्विक स्तर पर प्रोत्साहित किया जाता है।

प्रमुख अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर :-प्रयागराज में प्रत्येक वर्ष माघ माह में माघ मेला लगता है। एक माह तक नदी-तट पर नियमपूर्वक रहने को कल्पवास कहते हैं। कुछ लोग कल्पवास सौर मास की मकर संक्रान्ति से कुम्भ की संक्रान्ति तक मानते हैं और कुछ लोग चन्द्रमास के अनुसार माघ महीने भर का मानते हैं। महाभारत में कहा गया है-

दश तीर्थसहस्राणि तिस्रः कोट्यस्तथा पराः ।

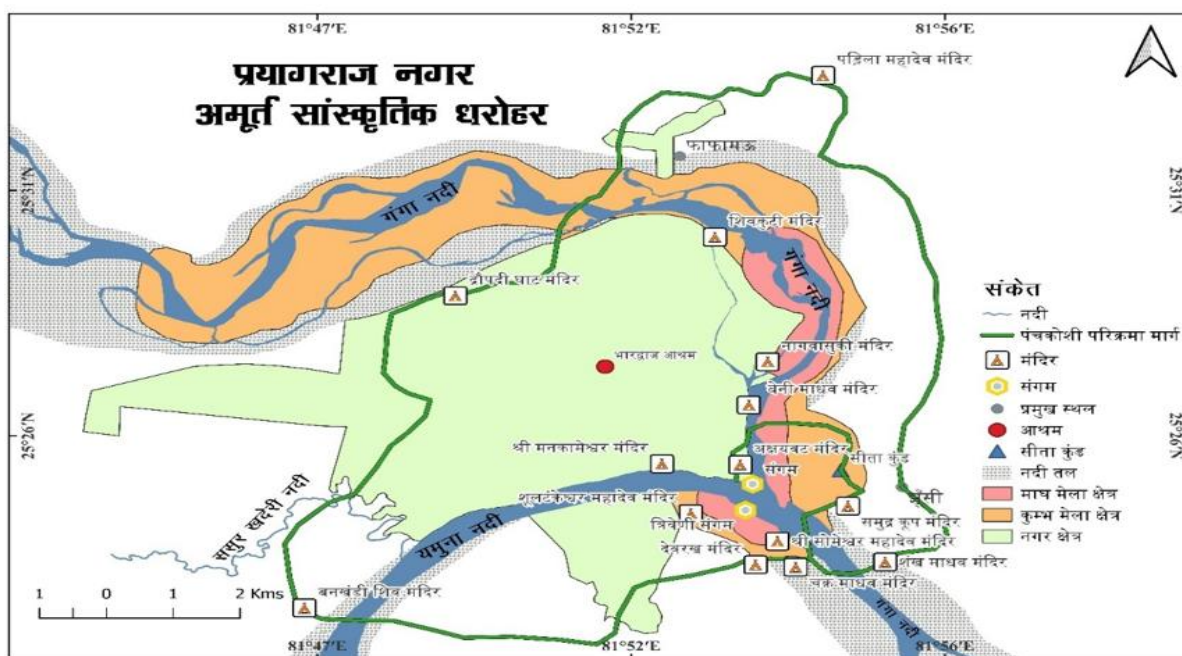
समागच्छन्ति माध्यां तु प्रयागे भरतवर्ष ॥

माघमासं प्रयागे तु नियतः संशितव्रतः ।

स्रात्वा तु भरतश्रेष्ठ निर्मलः स्वर्गमाप्नुयात् ॥

अर्थात् माघ मास की अमावस्या को प्रयाग तीर्थ में तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थों का समागम होता है। जो नियमपूर्वक उत्तम व्रत का पालन करते हुए माघ के महीने में प्रयाग में स्नान करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाता है।

मानचित्र – प्रयागराज नगर के प्रमुख अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर



स्रोत- आर्क जी.आई.एस.

कल्पवास :-

प्रत्येक वर्ष माघ-मास में धर्मप्राण व्यक्ति एक मास के लिए कल्पवास करते हैं। कुम्भ-पर्व के दौरान कल्पवास की महिमा और अधिक बढ़

जाती है। कल्पवास स्वेच्छापूर्वक संकल्पित कठोर तपस्या है। इसके प्रमुख नियम हैं- दिन में एक बार स्वयं पकाया हुआ स्वल्पाहार अथवा बिना पकाया हुआ फल आदि का भोजन (ताकि पकाने का झंझट उसे हरि-विमुख न कर सके) प्रमुख पर्वों पर उपवास तीन बार गंगा, यमुना

अथवा त्रिवेणी संगम में स्नान, त्रिकाल संध्या- वन्दन, भूमि-शयन, इन्द्रिय- शमन, ब्रह्मचर्य, जप, हवन, देवार्चन, अतिथि-देव- सत्कार, गो-विप्र-संन्यासी सेवा, सत्संग, मुण्डन एवं पितरों का तर्पण। कल्पवासी अपने को सांसारिक सुखों से विहीन करके हरि-कीर्तन एवं चिन्तन-मनन में संलग्न रखें। शास्त्र कल्पवास के दौरान गृहस्थों को नित्यशुद्ध रेशमी अथवा ऊनी अथवा पीत परिधान धारण करने की सलाह देते हैं।

कल्पवास में स्नान :-

शास्त्रों में 4 प्रकार के स्नान वर्णित हैं- भस्म-स्नान, जल-स्नान, मंत्र-स्नान एवं गोरज-स्नान। भस्म-स्नान को अग्नि स्नान, जल से स्नान करने को वरुण-स्नान, आपोहिष्ठादि मंत्रों द्वारा किए गए स्नान को ब्रह्म-स्नान तथा गोधूलि द्वारा किए गए स्नान को वायव्य स्नान कहा जाता है।

कल्पवास में ब्रह्मचर्य पालन :-

ब्रह्मचर्य को सभी तपों में सर्वोपरी तप कहा गया है। ब्रह्मचर्य का अर्थ ब्रह्म की चर्या अर्थात् ब्रह्म में विहार करना।

प्रयाग-परिक्रमा :-

प्रयाग में तीन प्रकार की परिक्रमाएँ परिकल्पित हैं-

प्रयाग-परिक्रमा	
प्रयाग-परिक्रमा	स्थल
अन्तर्वेदी-परिक्रमा	त्रिवेणी, अक्षयवट, धृतकुल्या, आदित्यतीर्थ, रामतीर्थ, कामेश्वर तीर्थ ;मनकामेश्वरद्व, वरुआ घाट, चक्रतीर्थ, ललिता तीर्थ ;ललिता देवीद्व, भरद्वाज-आश्रम, द्रौपदी-घाट, शिवकोटि, नागवासुकि, दशाश्वमेध। वेणीमाधव, लक्ष्मीतीर्थ, सोमतीर्थ, अक्षयवट तथा संगम।
मध्यवेदी स्थल	वेणीमाधव, हनुमान कुण्ड, सीताकुण्ड, वरुणतीर्थ, यमतीर्थ,चक्रमाधव, सोमतीर्थ, सूर्यतीर्थ, कुबेर तीर्थ, अग्नितीर्थ, शूलटंकेश्वर तथा त्रिवेणी
बहिर्वेदी स्थल	त्रिवेणी, समुद्रकूप, ऐल तीर्थ, नलतीर्थ, ब्रह्मकुण्ड, शाल्मली तीर्थ, उर्वशीतीर्थ, अरुन्धती तीर्थ, मानस तीर्थ, शंखमाधव, व्यास आश्रम तथा त्रिवेणी।

प्रयाग में पञ्चक्रोसी परिक्रमा का क्रम और मार्ग :-

प्रयाग में पञ्चक्रोसी परिक्रमा का क्रम और मार्ग	
दिन	परिक्रमा का क्रम और मार्ग
पहले दिन	त्रिवेणी स्नान, देव-पूजन और प्रतिज्ञा-संकल्प कर अक्षयवट का पूजन करने के पश्चात् यमुना के पार में शूलटंकेश्वर का दर्शन-पूजन।
दूसरे दिन	तट-भाग से सोमतीर्थ, सूर्यतीर्थ, कुबेरतीर्थ, वायुतीर्थ, अग्नितीर्थ प्रभृति को प्रणाम कर महाप्रभु वल्लभाचार्य जी का बैठक में होकर नैनी गाँव में जाकर गदामाधव का और सैनी में कम्बलाश्वतर तीर्थ का दर्शन करने के पश्चात् रामसागर में उस रात्रि निवास।
तीसरे दिन	वीकर देवरिया देवरख में यमुना जी के तट भाग में निवास करने के उपरान्त इस स्थान में श्राद्ध करने का अनन्त फल।
चौथे दिन	यमुना पार में वनखण्डी शिवजी के क्षेत्र में अथवा वेगमराय में रात्रि को निवास।
पाँचवें दिन	नीम घाट होकर द्रौपदी-घाट में जाकर निवास।।
छठे दिन	शिवकोटि तीर्थ में रात्रि में निवास
सतवें दिन	पड़िला महादेव जी का दर्शन कर मानस तीर्थ में जाकर रात्रि निवास।
आठवें दिन	झूसी होकर नागतीर्थ या शंखमाधव के समीप जाकर रात्रि में निवास।
नवें दिन	नागतीर्थ, संघ माधव, व्यास आश्रम, समुद्रकूप, ऐलीतीर्थ, संकटहरमाधव, सन्ध्यावट, हंसकूप,हंसतीर्थ, ब्रह्मकुण्ड, उर्वशीतीर्थ और अरुन्धती तीर्थ होते हुए झूसी में रात्रि विश्राम करने का प्रावधान।
दसवें दिन	त्रिवेणी में जाकर बहिर्वेदी की परिक्रमा कर उस जगह रात्रि में निवास।
ग्यारहवें दिन	अन्तर्वेदी की परिक्रमा कर उसी जगह रात्रि में निवास।

कल्पवास में सत्संग एवं हरि-स्मरण :-

कल्पवास में सत्संग, हरि-स्मरण, हरिनाम संकीर्तन, मन्त्र-जाप करने का बहुत महत्त्व है। पुराणों में कहा गया है कि सत्ययुग में हजारों-हजार वर्षों तक तपस्या, त्रेतायुग में सौ-सौ अश्वमेधादि यज्ञ, द्वापर में सर्वस्व दान और कलियुग में श्रीहरि नाम स्मरण का फल बराबर है।

कल्पवास में व्रतोपवास :-

व्रतोपवास भी कुम्भचर्या के अभिन्न अंग हैं। उपवास यथासम्भव निर्जल एवं निराहार रहकर करना चाहिए। यदि ऐसा करने की सहनशक्ति न हो तो जल, दुग्ध अथवा अल्प मात्रा में फल का सेवन कर सकते हैं। किन्तु इनका बारम्बार सेवन अनुचित होगा। उपवास के पूर्व दिन में मात्र एक बार भोजन कर उदर को आराम देना चाहिए।

कल्पवास में दान :-

दान का अर्थ है- अपनी किसी वस्तु का स्वामी किसी दूसरे को बना देना। दान लेने की स्वीकृति मन से, वचन से या शरीर से दी जा सकती है। जिस चीज को लेने से अदृष्ट आध्यात्मिक पुण्य प्राप्त हो और जिसे देते समय पवित्र मंत्र पढ़े जाएँ, वहीं दान है।

बारहवें दिन	त्रिवेणी में स्नान कर वटवृक्ष का पूजन होता, मधुकुल्या, घृतकुल्या, निरन्जनतीर्थ, आदित्यतीर्थ, ऋणमोचन तीर्थ, पापमोचन तीर्थ गोदोहन तीर्थ, सोमतीर्थ, सरस्वती कुण्ड, कामेश्वर तीर्थ, बरुआघाट, तक्षकेश्वर, तक्षक-कुण्ड, कालियादह, वक्रतीर्थ, सिंधुसागर तीर्थ, पाण्डवकूप और वरुणकूप होकर द्रव्येश्वरनाथ का दर्शन करते हुए सूर्यकुण्ड में जाप और उस दिन भारद्वाज आश्रम में रात्रि में निवास।
-------------	--

प्रयागराज मकरस्थ कुम्भ :-

अपने देश में 6-6 वर्ष पर हरिद्वार तथा प्रयागराज में अर्धकुम्भ, 12-12 वर्ष पर हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक में कुम्भ तथा 144 वर्ष पर प्रयागराज में महाकुम्भ का आयोजन अति प्राचीन काल से हो रहा है। हरिद्वार में गंगा तट पर प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती के त्रिवेणी-तट पर उज्जैन में शिप्रा तट पर और नासिक में गोदावरी तट पर कुम्भ का आयोजन होता है।

कुम्भ की वजह से प्रयाग की कीर्ति-पताका देश-विदेश में फहरा रही है। यहाँ प्रति बारहवें वर्ष जब बृहस्पति वृष राशि में और सूर्य मकर राशि में होते हैं, कुम्भ-पर्व का आयोजन होता है। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनेस्को ने प्रयागराज के संगम तट पर लगने वाले कुम्भ मेला के महत्व और तीर्थ यात्रियों की पवित्र आस्था एवं विश्वास को देखते हुए कुम्भ मेला को सन् 2017 में अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर घोषित किया।

अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का नगर विकास में योगदान :-

प्रयागराज नगर की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों, जैसे कुम्भ मेला, माघ मेला, कल्पवास परंपरा, धार्मिक अनुष्ठान, अखाड़ा परंपरा तथा लोक-सांस्कृतिक गतिविधियों ने नगर विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन धरोहरों के कारण देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक एवं श्रद्धालु प्रयागराज आते हैं, जिससे पर्यटन, व्यापार एवं रोजगार को बढ़ावा मिलता है। साथ ही, सड़क, परिवहन, स्वच्छता तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं का विकास होता है। अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरें प्रयागराज की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करने के साथ-साथ सामाजिक एकता एवं सांस्कृतिक संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरें प्रयागराज के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास की महत्वपूर्ण आधारशिला हैं।

1. कुम्भ मेला से पर्यटन एवं रोजगार में वृद्धि।

2. माघ मेला से स्थानीय व्यापार को बढ़ावा।

3. कल्पवास परंपरा से धार्मिक पर्यटन का विकास।

4. लोकगीत एवं लोककला के सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण।

5. धार्मिक अनुष्ठान से सामाजिक एकता एवं सांस्कृतिक निरंतरता।

III. अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण

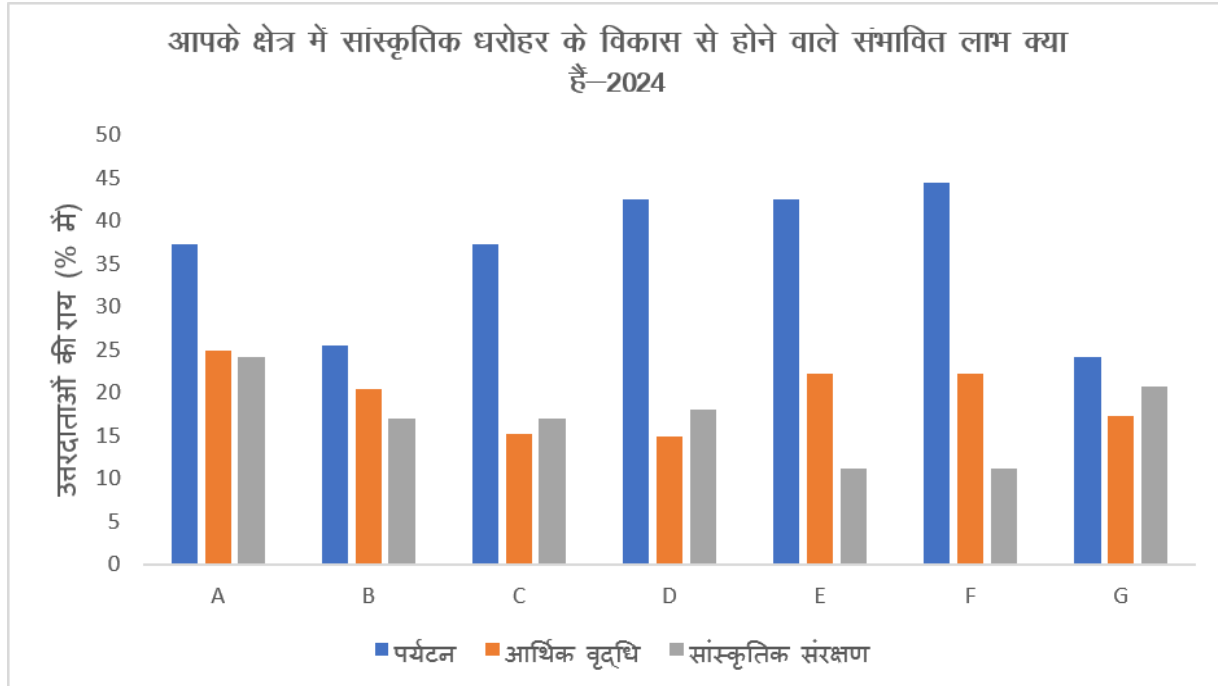
अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के विकास से होने वाले संभावित लाभ प्रयागराज नगर में अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के विकास से होने वाले संभावित लाभ 2024 के सर्वेक्षण के अनुसार विभिन्न जोनों में उत्तरदाताओं ने निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किए हैं- जोन A में 54 उत्तरदाताओं ने पर्यटन, 36 ने आर्थिक वृद्धि, 35 ने सांस्कृतिक संरक्षण, 10 ने पर्यावरणीय स्थिरता और 10 ने अन्य लाभों को बताया। जोन B में 15 ने पर्यटन, 12 ने आर्थिक वृद्धि, 10 ने सांस्कृतिक संरक्षण, 13 ने पर्यावरणीय स्थिरता और 9 ने अन्य लाभों को बताया। जोन C में 22 ने पर्यटन, 9 ने आर्थिक वृद्धि, 10 ने सांस्कृतिक संरक्षण, 8 ने पर्यावरणीय स्थिरता और 10 ने अन्य लाभों को बताया। जोन D में 40 ने पर्यटन, 14 ने आर्थिक वृद्धि, 17 ने सांस्कृतिक संरक्षण, 10 ने पर्यावरणीय स्थिरता और 13 ने अन्य लाभों को बताया। जोन E में 19 ने पर्यटन, 10 ने आर्थिक वृद्धि, 5 ने सांस्कृतिक संरक्षण, 4 ने पर्यावरणीय स्थिरता और 7 ने अन्य लाभों को बताया। जोन F में 4 ने पर्यटन, 2 ने आर्थिक वृद्धि बताया। जोन G में 7 ने पर्यटन, 5 ने आर्थिक वृद्धि, 6 ने सांस्कृतिक संरक्षण, 6 ने पर्यावरणीय स्थिरता और 5 ने अन्य लाभों को बताया। कुल मिलाकर, 161 उत्तरदाताओं ने पर्यटन, 88 ने आर्थिक वृद्धि, 84 ने सांस्कृतिक संरक्षण, 52 ने पर्यावरणीय स्थिरता और 55 ने अन्य लाभों को बताया।

सारणी - अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के विकास से होने वाले संभावित लाभ

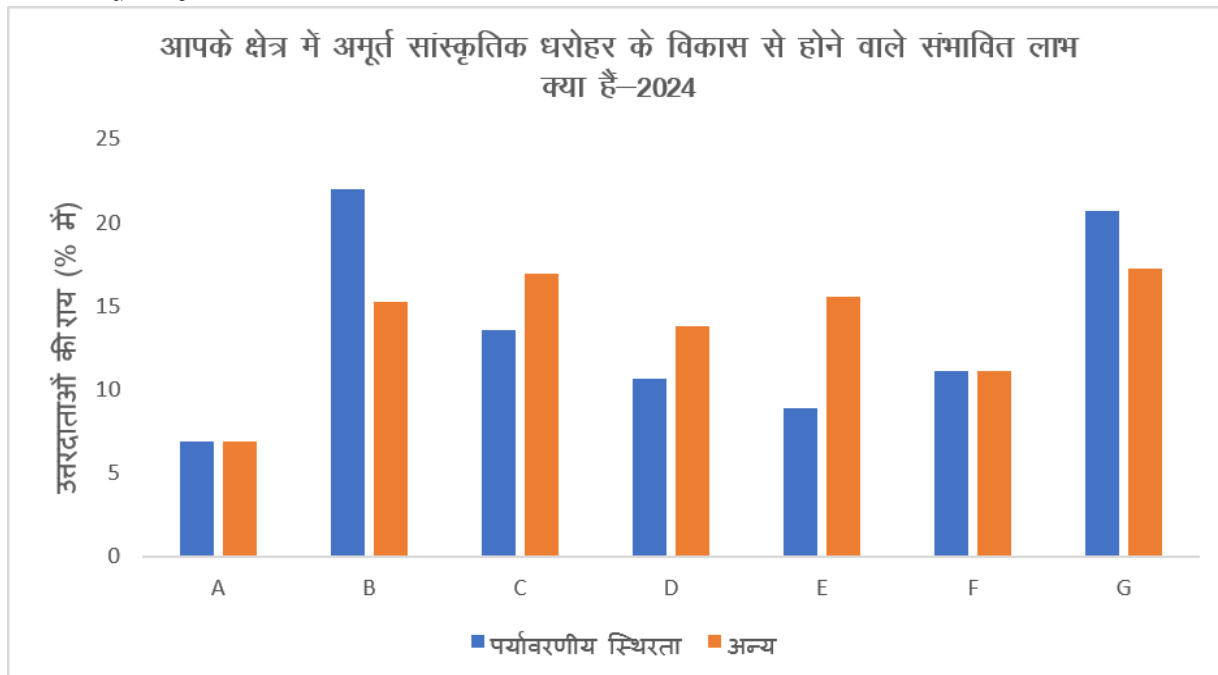
प्रयागराज नगर में सांस्कृतिक धरोहर के विकास से होने वाले संभावित लाभ क्या हैं-2024						
जोन	पर्यटन (प्रतिषत में)	आर्थिक वृद्धि (प्रतिषत में)	सांस्कृतिक संरक्षण (प्रतिषत में)	पर्यावरणीय स्थिरता (प्रतिषत में)	अन्य (कृपया विषिष्ट करें) (प्रतिषत में)	प्रतिदर्ष आकार (प्रतिषत में)
A	37.2	24.82	24.13	06.89	06.89	100.00
B	25.42	20.35	16.94	22.03	15.25	100.00
C	37.28	15.25	16.94	13.55	16.94	100.00
D	42.55	14.89	18.08	10.63	13.82	100.00
E	42.22	22.22	11.11	08.88	15.55	100.00
F	44.44	22.22	11.11	11.11	11.11	100.00
G	24.13	17.24	20.68	20.68	17.24	100.00
कुल	36.59	20.00	19.09	11.81	12.50	100.00

स्रोत- अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण

आरेख – अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के विकास से होने वाले संभावित लाभ (I)



आरेख – अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के विकास से होने वाले संभावित लाभ (II)



यह सर्वेक्षण दर्शाता है कि अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का विकास शहर को विभिन्न प्रकार के लाभ पहुंचा सकता है, जिसमें पर्यटन, आर्थिक वृद्धि, सांस्कृतिक संरक्षण, पर्यावरणीय स्थिरता, और अन्य लाभ शामिल हैं।

IV. चुनौतियाँ

1. तीव्र शहरीकरण के कारण पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण।
2. युवा पीढ़ी की पारंपरिक गतिविधियों में घटती रुचि।
3. सांस्कृतिक आयोजनों का बढ़ता व्यावसायीकरण।
4. सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण हेतु सीमित संसाधन।

V. सुझाव

1. नगर नियोजन में सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए।
2. स्थानीय समुदाय की सहभागिता बढ़ाई जाए।
3. लोककला एवं लोक संस्कृति के संरक्षण हेतु विशेष योजनाएँ बनाई जाएँ।
4. सांस्कृतिक पर्यटन को सतत विकास से जोड़ा जाए।
5. डिजिटल माध्यमों से सांस्कृतिक विरासत का दस्तावेजीकरण किया जाए।

VI. निष्कर्ष

प्रयागराज की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर नगर विकास की महत्वपूर्ण आधारशिला है। कुम्भ मेला, माघ मेला, कल्पवास, लोककला तथा धार्मिक परंपराएँ न केवल नगर की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करती हैं, बल्कि पर्यटन, रोजगार, व्यापार तथा आधारभूत संरचना के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। अतः सतत एवं समावेशी नगर विकास के लिए अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं संवर्धन को विकास नीतियों का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नगर विकास की योजनाओं में अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं संवर्धन को समुचित स्थान दिया जाना आवश्यक है। यदि विकास योजनाओं में सांस्कृतिक मूल्यों को सम्मिलित किया जाए, तो सतत एवं समावेशी नगरीय विकास को बढ़ावा मिल सकता है। अतः प्रयागराज के समग्र विकास के लिए उसकी अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण, प्रबंधन तथा भावी पीढ़ियों तक हस्तांतरण अत्यंत आवश्यक है।

VII. सन्दर्भ ग्रन्थ—सूची

- [1] Shaw, Julia (2000) Ayodhya's sacred landscape: ritual memory, politics, and archaeological 'fact'. *Antiquity*, 74 (issue 285), September: pp. 693-700.
- [2] Shinde, Kiran (2012) Place-making and environmental change in Hindu pilgrimage site in India. *Geoforum*, 43 (1), January: pp. 116-127.
- [3] Adams, Kathleen M. 2004b. Commentary: Locating Global Legacies in Tana Toraja, Indonesia. *Current Issues in Tourism*, 7 (4 & 5): 433-435.
- [4] Adams, Kathleen M. 2005. Public Interest Anthropology in Heritage Sites: Writing Culture and Righting Wrongs. *International Journal of Heritage Studies*, 11 (5): 433-439.
- [5] Adams, Kathleen M. 2004a. The Genesis of Touristic Imagery: Politics and Poetics in the Creation of a Remote Indonesian Island Destination. *Tourist Studies*, 4 (2): 115-135
- [6] ASI, Archaeological Survey of India. *Reports by Alexander Cunningham and others*. Simla 1871-

Calcutta 1887. 23 Vols. (reprints Delhi 1966-73. 21. Vols.)

- [7] Awadh, Ram 1984. *Ayodhya Ka Sanskritik Bhudrishya*; in, Rai, Kaushal Kumar (eds.) *Saket Anka*, Ministry of Information and Broadcasting, Lucknow, Uttar Pradesh, pp. 25-26.
- [8] Bakker, Hans T. 1986. *Ayodhya: The History of Ayodhya from the 17th century BC to the middle of the 18th century*. Egbert Forsten, Groningen.
- [9] Singh, Rana P.B. (1995) Heritage Ecology and caring for the Earth: a search for preserving harmony and ethical values. *National Geographical Journal of India*, 41 (2), June: pp. 191- 218.
- [10] Singh, Rana P.B. (2008) The Contestation of Heritage: The enduring importance of Religion. In, Graham, Brian and Howard, Peter (eds.) *Ashgate Research Companion to Heritage & Identity* (pp. 125-141). London: Ashgate Pub.
- [11] Singh, Rana P.B. (2015) Heritage Value of Religious Sites and Built Archetypes: The Scenario of Hinduism, and illustrating the Riverfront Varanasi. *Aatmbodh, the Journal of Knowledge of Self* (U.P. PG College, Varanasi), 12 (1), Spring: pp. 1- 23.
- [12] Singh, Rana P.B. (2020) Sacrality and Waterfront Spaces in India: Myths and Making of Place. In, Ray, Celeste (eds.) *Sacred Waters: A Cross-cultural Compendium of Hallowed Springs and Holy Wells* (pp. 80-94). London: Routledge.
- [13] Singh, Rana P.B.; Rana, Pravin S. and Kumar, Sarvesh (2021) Hinduism, Heritagization, and Holy Cities in India. In, Chanwan Kim & Hansang Kim (eds.)